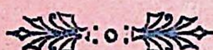
1-2

चमत्कारचिन्तामणि

रचयिता

पं० राजाराम ज्योतिषी फ़र्रुखाबाद



संशोधित संस्करण



प्रकाशक

तेजकुमार-बुकडिपो, (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ.

उत्तराधिकारी

नवलकिशोर-प्रेस, बुकडिपो, लखनऊ.

मुरलीधर मिश्र द्वारा

तेजकुमार-प्रेस (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ में मुद्रित ।

द्वितीयबार ५०००] सन् १९७२ ई० [मूल्य Rs. 2/50

श्रीगणेशाय नमः।

अथ

चमत्कारचिन्तामणिः।

भाषाटीकोपेतः।

दोहा—दिनकरमंडल प्रणवहूँ, पुनि पुनि धरि हृदि ध्यान।
होत न जाकी बिन कृपा, ज्योतिष कार्य महान॥ १॥
चमत्कारचिंतामणी, ज्योतिष ग्रन्थ प्रमान।
याते सब हित हृदयकर, भाषा करौं बखान॥ २॥

रविभावफल

तनुस्थो रविस्तुङ्गयष्टिं विधत्ते
मनः संतपेद्दारदायादिवर्गात्।
वपुः पीड्यते वातपित्तेन नित्यं
स वै पर्यटन् ह्रासवृद्धिं प्रयाति॥ १॥

तनु आदि भावों का सूर्य आदि ग्रहों के योग से फल कहते हैं—

जिस मनुष्य के जन्म के समय सूर्य लग्न में हो, वह पुरुष उच्च स्वरूप (अर्थात् लम्बे शरीर) वाला होता है और उसको स्त्री पुत्र आदि कुटुंबियों से क्लेश रहता है। वात व पित्त से उसका शरीर नित्य पीड़ित रहता है और वह देशांतरों में

फिरता हुआ उन्नति और अवनति को प्राप्त होता है अर्थात् उसका ऐश्वर्य कभी घटता है और कभी बढ़ता है ॥ १ ॥

धने यस्य भानुः स भाग्याधिकः स्या-
च्चतुष्पात्सुखं सद्व्यये स्वं च याति।
कुटुम्बे कलिर्जायया जायतेऽपि
क्रिया निष्फला याति लाभस्य हेतोः ॥२॥

जिसके लग्न से दूसरे स्थान में सूर्य हो, वह मनुष्य अधिक भाग्यवाला, चौपायों (घोड़ा आदि) से सुखी, धर्म आदि शुभ कार्यों में खर्च करनेवाला होता है। कुटुम्ब तथा स्त्री के साथ उसकी कलह रहती है और लाभ के लिये किया हुआ उसका उद्योग निष्फल होता है ॥ २ ॥

तृतीये यदाऽहर्मणिर्जन्मकाले
प्रतापाधिकं विक्रमं चातनोति।
तदा सोदरैस्तप्यते तीर्थचारी
सदाऽरिक्षयः संगरे शं नरेशात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्य के लग्न से तीसरे सूर्य हो, वह पुरुष अधिक प्रतापशाली और पराक्रम का करनेवाला, सहोदर भ्राताओं से कष्ट पानेवाला, तीर्थों की यात्रा करनेवाला, युद्ध में शत्रुओं का संहार करनेवाला और राजा से सम्मान पानेवाला होता है ॥ ३ ॥

तुरीये दिनेशेऽतिशोभाधिकारी
जनः संलभेद्विग्रहं बन्धुतोऽपि।
प्रवासी विपक्षाहवे मानभंगं
कदाचिन्न शान्तं भवेत्तस्य चेतः ॥ ४ ॥

जिसके लग्न से चौथे सूर्य हो, वह मनुष्य अति शोभा का अधिकारी होता है, बन्धुओं से विरोध प्राप्त करता है, सदा विदेश में रहता है और युद्ध में शत्रुओं से उसका मान भंग होता है। उसका चित्त कभी भी शांति को प्राप्त नहीं होता ॥४॥

सुतस्थानगे पूर्वजापत्यतापी
कुशाग्रा मतिर्भास्करे मन्त्रविद्या।
रतिर्वञ्चने संचकोऽपि प्रमादी
मृतिः क्रोडरोगादिजा भावनीया ॥ ५ ॥

जिसके सुतस्थान अर्थात् पंचम स्थान में सूर्य हो, वह पुरुष प्रथम संतान के शोक से कष्ट पानेवाला, कुशा के अग्र भाग के तुल्य तीक्ष्ण बुद्धिवाला अर्थात् महाबुद्धिमान्, मंत्र विद्या का जाननेवाला, ठगाई करनेवाला, प्रमादी, और द्रव्य का संचयी होता है और उसकी मृत्यु उदररोग आदि से होती है, ऐसा जानना चाहिए ॥५॥

रिपुध्वंसकृद्भास्करो यस्य षष्ठे
तनोति व्ययं राजतो मित्रतो वा ।
कुले मातुरापच्चतुष्पादतो वा
प्रयाणे निषादैर्विषादं करोति ॥ ६ ॥

जिसके छठे स्थान में सूर्य हो, वह मनुष्य रिपुओं का नाश करनेवाला और राजदंड के निमित्त व मित्रों के कार्य के हेतु द्रव्य खर्च करनेवाला होता है तथा यात्रा में मार्ग के मध्य भीलों (जंगली मनुष्यों) से दुःख पानेवाला अर्थात् मार्ग में भीलों से अपना द्रव्य लुटने पर दुःख को प्राप्त होता है और मातृकुल में घोड़ा आदि से गिर पड़ने से विपत्ति को प्राप्त होता है । [यहाँ मूल में 'कुले की जगह 'कुलात्' पाठ करने से माता के कुल से विपत्ति, अश्वादि से गिरना अथवा शृङ्गी पशु से विदीर्ण होना इत्यादि कष्ट कहना चाहिये] ॥ ६ ॥

द्युनाथो यदा द्यूनजातो नरस्य
प्रियातापनं पिण्डपीडा च चिन्ता ।
भवेत्तुच्छलब्धिः क्रये विक्रयेऽपि
प्रतिस्पर्धया नैति निद्रां कदाचित् ॥ ७ ॥

जिसके सप्तम स्थान में सूर्य होवे, उसको स्त्री की तरफ से दुःख रहता है और शरीर में पीड़ा, चिन्ता, मन की व्याकुलता होती है। बेचने-खरीदने के व्यवहार में स्वल्प लाभ होता है।

ईर्षा-विरोध के कारण रात्रि को निद्रा भी नहीं आती है, अर्थात् मनुष्यों के साथ उसका अत्यन्त द्वेष रहता है ।।७।।

क्रियालम्पटं त्वष्टमे कष्टभाजं
विदेशीयदारान् भजेद्वाऽप्यवस्तु।
वसुक्षीणता दस्युतो वा विलम्बा-
द्विपद् गुह्यता भानुरष्टं विधत्ते ॥ ८ ॥

जिसके अष्टम स्थान में सूर्य हो, वह मनुष्य व्यवहार में अत्यन्त धूर्त होता है और स्वयं कष्टयुक्त रहता है। वह विदेशी स्त्रियों से स्नेह करता है और न खाने योग्य चीजों को खाता है। चोरों से और आलस्य से उसका द्रव्य क्षीण होता है और परस्त्रीगमन आदि से सुजाक आदि की बीमारी प्रायः हुआ करती है ।। ८ ।।

दिवानायके दुष्टता कोणयाते
न चाप्नोति चिन्ताविरामं च चेतः।
तपश्चर्यया‌ऽनिच्छयाऽपि प्रयाति
क्रियातुंगतां तप्यते सोदरेण ॥ ९ ॥

जिस मनुष्य के नवम स्थान में सूर्य हो, वह मनुष्य बेमन किये हुए तप के फल को भी प्राप्त करता है अर्थात् दंभ से किये हुए तप से जगत में पुजने लग जाता है, उसको सहोदर भ्राता से क्लेश रहता है और दुष्टता के कारण

परद्रोह रखने से उसके चित्त को कभी शान्ति नहीं प्राप्त होती है अर्थात् आठों पहर इसके चित्त में चिंता बनी रहती है ॥ ९ ॥

प्रयातोंऽशुमान् यस्य मेषूरणेऽस्य
श्रमः सिद्धिदो राजतुल्यो नरस्य।
जनन्यास्तथा यातनामातनोति
क्लमः संक्रमेद्वल्लभैर्विप्रयोगः ॥ १० ॥

जिसके दशवें स्थान में सूर्य विद्यमान हो उसकी माता को रोगों से उत्पन्न होनेवाला क्लेश पैदा करता है। उसका पराक्रम राजा के तुल्य सिद्धि का करनेवाला होता है अर्थात् उसके सम्पूर्ण प्रयोजनों की सिद्धि करनेवाला होता है और उसे प्रिय मित्र, पुत्र, कलत्र आदि से वियोग होने के कारण सदा ग्लानि रहती है ॥ १० ॥

रवौ संलभेत्स्वं च लाभोपयाते
नृपद्वारतो राजमुद्राधिकारात्।
प्रतापानले शत्रवः संपतन्ति
श्रियोऽनेकधा दुःखभंगोद्भवानाम् ॥ ११ ॥

जिसके ग्यारहवें स्थान में सूर्य हो, वह मनुष्य राजा के दिये हुए द्रव्य को प्राप्त करता है और राजा के हुक्म से हाथी घोड़ा आदि अनेक प्रकार की संपत्ति का

लाभ करता है और उसकी प्रतापरूप अग्नि से शत्रु जलते हैं अर्थात् उसके उत्तम अधिकार को देखकर शत्रु जलते रहते हैं परन्तु उसको संतति का दुःख रहता है ॥ ११ ॥

रविर्द्वादशे नेत्ररोगं करोति
विपक्षाहवे जायतेऽसौ जयश्रीः।
स्थितिर्लब्धया लीयते देहदुःखं
पितृव्यापदो हानिरध्वप्रदेशे ॥ १२ ॥

जिसके बारहवें स्थान में सूर्य हो उस मनुष्य को मंददृष्टि आदि नेत्रदोष और चचा ताऊ से होनेवाला क्लेश करता है और युद्ध में शत्रुओं से विजय, लाभ की इच्छा से एक जगह स्थिति, शारीरिक पीड़ा का नाश, और मार्ग (रास्ता) में धन की हानि इत्यादि फल करता है ॥ १२ ॥

चन्द्रभावफल

विधुर्गोकुलीराजगः सन्वपुस्थो
धनाध्यक्षलावण्यमानन्दपूर्णम्।
विधत्तेऽधनं क्षीणदेहं दरिद्रं
जडं श्रोत्रहीनं नरं शेषलग्ने ॥ १ ॥

जिसके जन्मलग्न में चन्द्रमा वृष, कर्क और मेष इन राशियों का होकर पड़े तो वह मनुष्य द्रव्यवान् एवं आनन्द, लावण्य, सुन्दरता से पूर्ण होता है और इनसे अन्य राशि

का हो तो निर्धन, क्षीण शरीरवाला, दरिद्री, जड़ (महामूर्ख), कर्णेन्द्रियरहित अर्थात् बहिरा होता है ॥ १ ॥

हिमांशौ वसुस्थानगे धान्यलाभः
शरीरेऽतिसौख्यं विलासोऽङ्गनानाम् ।
कुटुम्बे रतिर्जायते तस्य तुच्छं
वशं दर्शने याति देवांगनाऽपि ॥ २ ॥

जिसके धनस्थान में चन्द्रमा हो उस मनुष्यको धान्य लाभ, अत्यन्त शारीरिक सुख, अंगनाओं (स्त्रियों) का विलास, कुटुम्ब में स्वल्प आसक्ति इत्यादि फल होते हैं और उसके दर्शन से देवांगना भी मोहित हो जायँ फिर और स्त्रियों की क्या बात है ॥२॥

विधौ विक्रमे विक्रमेणैति वित्तं
तपस्वी भवेद्भामिनीरञ्जितोऽपि ।
कियच्चिंतयेत्साहजं तस्य शर्म
प्रतापोज्ज्वलो धर्मिणो वैजयन्त्या ॥ ३ ॥

जिसके तृतीय स्थान में चन्द्रमा हो वह मनुष्य अपने उद्यम से धन संचय करनेवाला और रूपवती आदि स्त्रियों का लुभाया हुआ भी अपने धर्म से न डिगनेवाला तपस्वी होता है । वह धर्मात्मा उज्ज्वल यशवाला तथा सहोदर भ्राताओं के सुख से परिपूर्ण होता है ॥ ३ ॥

यदा बन्धुगो बान्धवैरत्रिजन्मा
नृपद्वारि सर्वाधिकारी सदैव।
वयस्यादिमे तादृशं नैव सौख्यं
सुतस्त्रीगणात्तोषमायाति सम्यक् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मलग्न से चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा हो उस मनुष्य को वांधवों का सुख, पुत्र-स्त्रीगण से पूर्ण संतोष प्राप्त होता है और राजद्वार में सदा संपूर्ण कामों के अधिकार को रखनेवाला होता है और कुमार अवस्था में सुखरहित होकर पश्चात् वह पहले कहे हुए पूर्ण सुख को भोगता है ॥ ४ ॥

यदा पंचमे यस्य नक्षत्रनाथो
ददातीह संतानसंतोषमेव।
मतिं निर्मलां रत्नलाभं च भूमिं
कुसीदेन नानाप्तयो व्यावसायात् ॥ ५ ॥

जिसके पंचम स्थान में चन्द्रमा हो वह पुरुष संतान का पूर्ण सुख, निर्मल बुद्धि, रत्नलाभ, और पृथ्वी इनको प्राप्त करता है और कालांतर में कुसीद (ब्याज) व्यवहार से अनेक प्रकार का लाभ प्राप्त करता है ॥ ५ ॥

रिपौ राजते विग्रहेणापि राजा
जितास्तेऽपि भूयो विधौ संभवन्ति।

तदग्रेऽरयो निष्प्रभा भूयसोऽपि
प्रतापोज्ज्वलो मातृशीलो न तद्वत् ॥ ६ ॥

जिसके शत्रु स्थान अर्थात् छठे स्थान में चन्द्रमा हो उसका शत्रु राजा भी हो तो भी उसका प्रताप क्षीण न हो, उसके शत्रु पराजित होकर क्षीणकांति बने रहें परन्तु शत्रु उसके होते ही रहें, और वह अपनी माता की सेवा में तत्पर न हो इत्यादि फल जानना ॥ ६ ॥

ददेद्दारशं सप्तमे शीतरश्मि-
र्धनित्वं भवेदध्ववाणिज्यतोऽपि ।
रतिं स्त्रीजने मिष्टभुग्लुब्धचेताः
कृशः कृष्णपक्षे विपक्षाभिभूतः ॥ ७ ॥

यदि सप्तम स्थान में चन्द्रमा हो तो स्त्रीसुख तथा विदेश में वाणिज्य आदि व्यापार से धन लाभ करता है । कृष्णपक्ष में स्त्रीजनों के भाषण में आसक्तिवाला, मिष्ट भोजन का प्रेमी, लोभी चित्तवाला, दुर्बल शरीरवाला तथा शत्रुओं से जीता हुआ मनुष्य होता है ॥ ७ ॥

सभा विद्यते भैषजी तस्य गेहे
पचेत्कर्हिचित्क्वाथमुद्गोदकानि ।
महाव्याधयो भीतयो वारिभूताः
शशी क्लेशकृत्संकटान्यष्टमस्थः ॥ ८ ॥

जिसके अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो उसके घर में वैद्यों की सभा बनी रहे और क्वाथ मुद्गोदक आदि पकता रहे अर्थात् उसके ज्वर आदि रोगों से पीड़ित होने के कारण ऐसा हो। किसी समय में उसे जल से उत्पन्न होनेवाले रोग, राजरोग, जल में डूबना आदि भय, महासंकट, दुर्जनों से बन्धन आदि दुःख होते रहें ॥ ८ ॥

तपोभावगस्तारकेशो जनस्य
प्रजाश्च द्विजा बन्दिनस्तं स्तुवन्ति।
भवत्येव भाग्याधिको यौवनादेः
शरीरे सुखं चंद्रवत्साहसं च ॥ ९ ॥

जिसके नवम स्थान में चन्द्रमा स्थित हो उसकी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और वंदीजन स्तुति करते रहें। प्रजा के इतर जन भी स्तुति और गुणों का कथन करते रहें। वह यौवन, शूरता, धन, शील, व्यवहार इत्यादि गुणों करके भाग्यशाली हो, शारीरिक सुख से सम्पन्न तथा चन्द्रमा की भाँति साहसी हो ॥ ९ ॥

सुखं बान्धवेभ्यः खगे धर्मकर्मा
समुद्रांगजे शं नरेशादितोऽपि।

नवीनांगनावैभवे सुप्रियत्वं
पुरोजातके सौख्यमल्पं करोति ॥ १० ॥

यदि जन्म लग्न से चन्द्रमा दशम स्थान में हो, तो वह मनुष्य धर्म-कर्म का करनेवाला, बांधवों से सुख पानेवाला, राजा से भी कल्याण पानेवाला, नवीन अंगनाओं के वैभव में प्रीति करने वाला होता है और उसको प्रथम संतान से अथवा भृत्यों से स्वल्प सुख मिलता है ।। १० ।।

लभेद्भूमिपादिन्दुना लाभगेन
प्रतिष्ठाधिकाराम्बराणि क्रमेण ।
श्रियोऽथ स्त्रियोऽन्तःपुरे विश्रमन्ति
क्रिया वैकृती कन्यकावस्तुलाभः ॥ ११ ॥

यदि एकादश स्थान में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य राजा द्वारा क्रम से प्रतिष्ठा, अधिकार, और वस्त्र प्राप्त करे और उसके घर में स्त्रियाँ एवं धन सदा स्थिर रहें और उसको अनेक वस्तुओं से लाभ हो परन्तु वह जिस कृत्य का आरम्भ करे उसमें विकार हो। कन्या का तथा उत्तम वस्तु का लाभ हो ।। ११ ।।

शशी द्वादशे शत्रुनेत्रादिचिन्ता
विचिन्त्या सदा सद्व्ययो मंगलेन ।

पितृव्यादिमात्रादितोऽन्तर्विषादो
न चाप्नोति कामं प्रियाल्पप्रियत्वम् ॥१२॥

यदि द्वादश स्थान में चन्द्रमा हो तो उस मानव को शत्रुओं के भय के कारण चिन्ता बनी रहे, नेत्र आदि विकारों से विशेष चिंता रहे, विवाह आदि मंगल कार्यों में इसका द्रव्य व्यय होता रहे और उसे चचा, ताऊ, पिता, भ्राता, पुत्र एवं माता के कुल आदिकों से चित्त में दुःख बना रहे। इसी कारण इन पूर्वकथितों से थोड़ा स्नेह हो अर्थात् इनमें विराग ही बना रहे और इन पितृव्य आदिकों से वह वांछित फल को स्वल्प भी न प्राप्त करे ॥१२॥

भौमभावफल

विलग्ने कुजे दण्डलोहाग्निभीति-
स्तपेन्मानसं केसरी किं द्वितीयः।
कलत्रादिघातः शिरोनेत्रपीडा
विपाके फलानां सदैवोपसर्गः ॥ १ ॥

जिस मनुष्य के जन्म लग्न में भौम हो उस मनुष्य को दंड (लाठी), लोहा, अग्नि इनसे भय हो, स्त्री, पुत्र आदि के नष्ट होने से कष्ट तथा शिर और नेत्र में पीड़ा हो और अपने किये कार्य के सिद्ध होने में सदैव कोई विघ्न

हो जावे, इसलिए चित्त को क्लेश बना रहे, परंतु उद्यम करने में यह मनुष्य सिंह के समान पुरुषार्थी हो ॥ १ ॥

भवेत्तस्य किं विद्यमाने कुटुम्बे
धनेऽङ्गारको यस्य लब्धे धने किम् ।
यथा त्रायते मर्कटः कंठहारं
पुनः सम्मुखं को भवेद्वादभग्नः ॥ २ ॥

जिसके धनस्थान में मंगल हो उस मनुष्य को धन विद्यमान होते हुए भी और कुटुम्ब, स्वजन विद्यमान रहते भी कुछ फल न हो अर्थात् इनसे सुख न मिले। जैसे वानर अपने कंठ में किसी के डाले हुए हार को चिरमिटियों का हार समझ कर रक्षा करता है, इसी प्रकार वह लोभी भी अपने द्रव्य को कुटुम्ब के उपयोग में कभी व्यय नहीं करता है। उसके साथ वाद-विवादमें लोग हारते हैं और हारने पर कोई पुरुष फिर उसका सामना नहीं करता ॥२॥

कुतो बाहुवीर्यं कुतो बाहुलक्ष्मी-
स्तृतीये न चेन्मंगलो मानवानाम् ।
सहोत्थव्यथा भण्यते केन तेषां
तपश्चर्यया चोपहास्यं कथं स्यात् ॥ ३ ॥

यदि तृतीय स्थान में मङ्गल न हो तो उस पुरुष को भुजाओं का पराक्रम तथा अपनी भुजाओं से संचित किया द्रव्य कहाँ

से हो, अपने बन्धु-बान्धवों से उत्पन्न पीड़ा का वर्णन कौन करे और तपस्या करने से उसका उपहास कैसे हो ? अर्थात् ये फल मङ्गल ही की विशेषता से होते हैं। भ्रातृपीड़ा होती ही है और इसका तपश्चर्या के कारण उपहास कैसे न हो अर्थात् होता ही है ॥ ३ ॥

यदा भूसुतः संभवेत्तुर्यभावे
तदा किं ग्रहाः सानुकूला जनानाम् ।
सुहृद्वर्गसौख्यं न किंचिद्विचिन्त्यं
कृपावस्त्रभूमीर्लभेद्भूमिपालात् ॥ ४ ॥

यदि मंगल चतुर्थ स्थान में हो तो उस मनुष्य के अन्य सानुकूल ग्रह क्या कर सकते हैं अर्थात् मङ्गल का ही अनिष्ट फल होता है। उस मनुष्य को सुहृद्वर्ग का सुख स्वल्प ही होता है परन्तु राजा की कृपा होने के कारण उसको राजा से वस्त्र तथा भूमि का लाभ होता है ॥ ४ ॥

कुजे पञ्चमे जाठराग्निर्बलीया-
न्नजातं नु जातं निहन्त्येक एव ।
तदानीमनल्पा मतिः किल्विषेऽपि
स्वयं दुग्धवत्तप्यतेऽन्तः सदैव ॥ ५ ॥

जिसके पंचम स्थान में मंगल हो उसकी जठराग्नि (पाचनशक्ति) प्रबल होती है और पंचम भवन में स्थित

एक मंगल ही उसकी जन्मी और अजन्मी सब संतान को नष्ट कर देता है अर्थात् वह संततिहीन रहता है। उसकी बुद्धि अत्यन्त पाप में लीन रहती है और उसका मन सदा दुग्ध की तरह उबलता रहता है ॥ ५ ॥

न तिष्ठन्ति षष्ठेऽरयोऽङ्गारके वै
तदङ्गेरिताः संगरे शक्तिमन्तः ।
मनीषी सुखी मातुलेयो न तद्ध-
द्विलीयेत वित्तं लभेताऽपि भूरि ॥ ६ ॥

जिसके षष्ठ स्थान में मंगल हो उसकी प्रबलता से युद्ध में उसके शत्रु मंत्री आदिकों के भय से ही भाग जाते हैं फिर उसके आगे तो कैसे ठहर सकते हैं। उसकी बुद्धि तीव्र होती है तथा उसके ममेरे भाई को सुख नहीं प्राप्त होता है। उसका एक बार बहुत द्रव्य नष्ट होकर फिर बहुत द्रव्य प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

अनुद्धारभूतेन पाणिग्रहेण
प्रयाणेन वाणिज्यतो नो निवृत्तिः ।
मुहुर्भंगदः स्पर्धिनां मेदिनीजः
प्रहारार्दनैः सप्तमे दम्पतिघ्नः ॥ ७ ॥

जिसके सप्तम स्थान में मंगल स्थित हो उस मनुष्य

को वाद-विवाद में, शत्रुओं के ताडन-पीडन आदि से बारबार पराजय (हार) हो तथा स्त्री-पुरुष का नाश हो अर्थात् स्त्री के सप्तम भवन में पड़ा हुआ मंगल पुरुष का नाश करे और पुरुष के पड़ा हो तो स्त्री का नाश करे । वह पुरुष विवाह के लिए अथवा व्यापार के कारण विदेश में यात्रा करे, परंतु फिर कर पश्चात् घर आ सके अर्थात् विवाह के अभिप्राय से एवं व्यापार के अभिप्राय से बहुत काल तक विदेश में स्थित रहे ॥ ७ ॥

शुभास्तस्य किं खेचराः कुर्युरन्ये
विधानेऽपि चेदष्टमे भूमिसूनुः ।
सखा किं न शत्रूयते सत्कृतोऽपि
प्रयत्ने कृते भूयते चोपसर्गः ॥ ८ ॥

जिसके अष्टम स्थान में मंगल हो उस पुरुष के भाग्य स्थान में स्थित हुए अन्य शुभ ग्रह क्या कर सकते हैं अर्थात् मंगल कृत अनिष्ट फल ही होता है, उस पुरुष का मित्र सत्कार किया हुआ भी क्या शत्रुता नहीं करता अर्थात् करता ही है और वह मनुष्य लाभ के जिस कार्य को प्रारंभ करता है उसी में विघ्न हो जाता है ॥ ८ ॥

महोग्रा मतिर्भाग्यवित्तं महोग्रं
तपो भाग्यगो मंगलस्तं करोति ।

भवेन्नादिमः श्यालकः सोदरो वा
कुतो विक्रमस्तुच्छलाभो विपाके ॥ ९ ॥

यदि नवम स्थान में भौम स्थित हो तो उस मनुष्य को वह भाग्य से प्राप्त द्रव्यवाला, तेजस्वी तथा अतिक्रूर बुद्धिवाला करता है, उसका बड़ा साला या बड़ा भ्राता नहीं हो सकता है अर्थात् या तो स्वतः न हो या उसकी मृत्यु हो जावे और उसको लाभ का उद्यम करने से भी तुच्छ फल हो अर्थात् लाभ स्वल्प हो ॥ ९ ॥

कुले तस्य किं मंगलं मंगलो नो
जनैर्भूयते मध्यभावे यदि स्यात्।
स्वतः सिद्ध एवावतंसायतेऽसौ
वराकोऽपि कण्ठीरवः किं द्वितीयः ॥ १० ॥

जिस मनुष्य के दशम स्थान में मंगल न हो उसके कुल में क्या कुछ मंगल होता है अर्थात् नहीं होता। अभिप्राय यह है कि जिसके दशम स्थान में मंगल हो उस पुरुष के कुल में सदा मंगल कार्य होता ही रहता है। उस मनुष्य के बहुत-से भृत्य (नौकर) होते हैं और वह पुरुष अपने ही उद्यम से लब्ध हुई संपत्ति से जनों में मुख्य अधिकार को प्राप्त होता है और वह हीनकुल का भी मनुष्य

हो तो भी पराक्रम करके दूसरे सिंह के तुल्य पराक्रमी होता है ॥ १० ॥

कुजः पीडयेल्लाभगोऽपत्यशत्रून्
भवेत्सम्मुखो दुर्मुखोऽपि प्रतापात् ।
धनं वर्द्धते गोधनैर्वाहनैर्वा
सकृच्छून्यतार्थे च पैशुन्यभावात् ॥ ११ ॥

यदि एकादश स्थान में मंगल हो तो उस मनुष्य के पुत्र आदि को और शत्रुओं को पीड़ा हो। अधिक प्रतापशाली होने से वह सब मनुष्यों के देखने योग्य हो, गोधन तथा रथ, ऊँट, घोड़ा आदि के व्यापार से उसके धन की वृद्धि हो परन्तु मूर्खता के कारण एक बार उसका सम्पूर्ण द्रव्य नष्ट हो जावे ॥ ११ ॥

शताक्षोपि तत्सक्षतो लौहघातैः
कुजो द्वादशोऽर्थस्य नाशं करोति ।
मृषा किंवदन्तीभयं दस्युतो वा
कलिं पारधीहेतुदुःखं विचिन्त्यम् ॥ १२ ॥

यदि द्वादश स्थान में मंगल हो तो वह उस मनुष्य के द्रव्य का नाश करता है और शत्रुओं का नाश करनेवाला होता है। उस मनुष्य को झूठी निंदा के कारण व चोरों से व

शस्त्र से भय होता है और कलह रहता है तथा चोरों के कारण भृत्यों (नौकरों) से दुःख प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

बुधभावफल

बुधो मूर्तिगो मार्जयेदन्यरिष्टं
वरिष्ठा धियो वैखरीवृत्तिभाजः ।
जना दिव्यचामीकरीभूतदेहा-
श्चिकित्साविदो दुश्चिकित्स्या भवन्ति ॥ १ ॥

यदि बुध लग्नस्थान में स्थित हो तो अन्य ग्रहजनित दोषों को निवृत्त करता है। वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिवाला, सुवर्ण के सदृश सुंदर वर्णवाला और पुस्तक आदि लिखने से आजीविका करनेवाला होता है। वह भिषक्विद्या में निपुण अर्थात् वैद्य होता है परन्तु स्वयं रोगग्रस्त होने पर उसकी चिकित्सा कठिनाई से हो पाती है ॥ १ ॥

धने बुद्धिमान् बोधने बाहुतेजाः
सभासंगतो भासते व्यास एव ।
पृथूदारता कल्पवृक्षस्य तद्वद्
बुधैर्भण्यते भोगतः षट्पदोऽयम् ॥ २ ॥

जिसके द्वितीय स्थान में बुध हो वह मनुष्य बुद्धिमान्, बड़ा तेजस्वी, भुजप्रतापवान्, सभा में व्यासजी के समान शोभा

पानेवाला, भौंरे के समान विषयभोग का भोगनेवाला और कल्पवृक्ष के समान उदारता वाला होता है ऐसा बुद्धिमानों ने कहा है ॥ २ ॥

वणिङ्मित्रतापण्यकृद्वृत्तिशीलो
वशित्वं धियो दुर्वशानामुपैति ।
विनीतोऽतिभोगं भजेत्संन्यसेद्वा
तृतीयेऽनुजैराश्रितो ज्ञे लतावान् ॥ ३ ॥

जिसके तृतीय स्थान में बुध हो वह मनुष्य वाणिक् की मित्रता से दुकानदारी द्वारा आजीविका करता है, शीलवान् और दुर्वशों को वश में कर सकनेवाला, भ्राताओं से युक्त, अति भोगों को भोगनेवाला और भोगों के अनन्तर संन्यास धारण करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थे चरेच्चन्द्रजश्चारुमित्रो
विशेषाधिकृद्भूमिनाथांगणस्य ।
भवेल्लेखको लिख्यते वा तदुक्तं
तदाशापरैः पैतृकं नो धनं च ॥ ४ ॥

यदि चतुर्थ स्थान में बुध हो तो वह मनुष्य अच्छे मित्रों वाला तथा राजद्वार का प्रधान लेखाधिकारी होता है और उसका कहा हुआ उसके अधीनस्थ लिखते हैं। उसके पास पिता द्वारा इकट्ठा किया हुआ धन नहीं होता ॥ ४ ॥

वयस्यादिमे पुत्रगर्भो न तिष्ठे-
द्भवेत्तस्य मेधाऽर्थसंपादयित्री ।
बुधैर्भण्यते पंचमे रौहिणेये
कियद्विद्यते कैतवस्याभिचारम् ॥ ५ ॥

यदि बुध पंचम स्थान में हो तो आदि अवस्था में पुत्रगर्भ न ठहरे, यदि ठहर भी जावे तो जन्म होकर उसकी मृत्यु हो जावे अर्थात् कन्या जन्म हो और पुत्र न हो । उस मनुष्य की बुद्धि द्रव्यसंचय करनेवाली हो तथा वह मनुष्य मारण, मोहन, उच्चाटन आदि छल-कपट जानने वाला हो । होरा जाननेवाले बुधों ने ऐसा कहा है ॥ ५ ॥

विरोधो जनानां निरोधो रिपूणां
प्रबोधो यतीनां च रोधोऽनिलानाम् ।
बुधे सद्व्यये व्यावहारो निधीनां
बलादर्थकृत्संभवेच्छत्रुभावे ॥ ६ ॥

जिसके शत्रुभाव अर्थात् छठे स्थान में बुध हो वह मनुष्यों के साथ विरोध और रिपुओं का निरोध (रोकना) करे, संन्यासियों से ज्ञान की प्राप्ति करे, नीरोग शरीरवाला हो, उत्तम कार्य में द्रव्य खर्च करे और अपने पुरुषार्थ से द्रव्य का संचय करनेवाला हो ॥ ६ ॥

सुतः शीतगोः सप्तमे शं युवत्या
विधत्ते तथा तुच्छवीर्यं च भोगे ।
अनस्तंगतो हेमवद्देहशोभां
न शक्नोति तत्संपदो वानुकर्तुम् ॥ ७ ॥

यदि बुध उदय हो और सप्तम स्थान में स्थित हो तो उस मनुष्य को स्त्री का पूर्ण सुख होवे परंतु मैथुनसमय में वह स्वल्प वीर्य स्थापन करे। उस मनुष्य के शरीर की कांति स्वर्णतुल्य हो और उसकी संपदा की बराबरी दूसरा स्वजाति न कर सके। यदि बुध अस्त हो तो इससे विपरीत फल हो ॥ ७ ॥

शतं जीविनो रन्ध्रगे राजपुत्रे
भवन्तीह देशान्तरे विश्रुतास्ते ।
निधानं नृपाद्विक्रयाद्वा लभन्ते
युवत्युद्भवं क्रीडनं प्रीतिमन्तः ॥ ८ ॥

यदि अष्टम स्थान में बुध हो तो उस मनुष्य की सौ (१००) वर्ष की आयु तथा देशान्तरों में विख्याति होती है, राजा से अथवा व्यवहार से द्रव्य की प्राप्ति और जवान स्त्रियों की क्रीड़ा का सुख होता है और वह मनुष्य सदा प्रसन्न रहता है ॥८॥

बुधे धर्मगे धर्मशीलोऽतिधीमान्
भवेद्दीक्षितः स्वर्धुनीस्नातको वा।
कुलोद्योतकृद्भानुवद्भूमिपालात्
प्रतापाधिको बाधको दुर्मुखानाम् ॥ ९ ॥

यदि नवम स्थान में बुध हो तो वह मनुष्य धर्मशील, बुद्धिमान्, सोमयज्ञ तथा गंगा में स्नान करनेवाला, सूर्य के समान कुल को प्रकाशित करनेवाला, राजा से भी अधिक प्रतापवाला और दुर्जनों का दमन करने वाला होता है ॥ ९ ॥

मितं संवदेन्नो मितं संलभेत्
प्रसादादिवैकारिसौराजवृत्तिः ।
बुधे कर्मगे पूजनीयो विशेषात्
पितुः संपदो नीतिदंडाधिकारात् ॥ १० ॥

यदि दशम स्थान में बुध हो तो पिता की संपत्ति विशेष प्राप्त हो, लोक में मान्य हो, तथा राजा की कचहरी का अधिकार मिलने से राजा के समान क्षमा और दंड प्रदान करने वाला हो। वह मनुष्य थोड़ा बोलनेवाला परन्तु दिव्यवस्त्र, अश्व आदि महान् ऐश्वर्य से सम्पन्न होता है ॥ १० ॥

विना लाभभावे स्थितं भेशजातं
न लाभो न लावण्यमानृण्यमस्ति ।
कुतः कन्यकोद्वाहदानं च देयं
कथं भूसुरास्त्यक्ततृष्णा भवन्ति ॥ ११ ॥

लाभभाव में जिस मनुष्य के बुध न हो उस मनुष्य के द्रव्यादि का लाभ, मनोहर रूप, ऋणरहित होना, कन्यादान में देने योग्य द्रव्य तथा द्रव्य देकर ब्राह्मण प्रसन्न करना, इतने फल कहाँ से हों अर्थात् एकादश स्थान में स्थित बुध ही यह फल करता है ॥ ११ ॥

न चेद्द्वादशे यस्य शीतांशुजातः
कथं तद्गृहं भूमिदेवा भजन्ति ।
रणे वैरिणो भीतिमायान्ति कस्मा-
द्धिरण्यादिकोशं शठः कोऽनुभूयात् ॥ १२॥

जिस मनुष्य के लग्न से द्वादश स्थान में बुध न हो तो उस मनुष्य के घर में ब्राह्मण कैसे प्राप्त हों, युद्ध में भय से शत्रु कैसे भागें तथा उसे सुवर्णादिकों का खजाना कैसे मिले अर्थात् व्यय (द्वादश) स्थान में स्थित हुआ बुध ही इतने फलों को देता है ॥ १२ ॥

गुरुभावफल ।

गुरुत्वं गुणैर्लग्नगे देवपूज्ये
सुवेषी सुखी दिव्यदेहोऽल्पवीर्य्यः ।
गतिर्भाविनी पारलौकी विचिन्त्या
वसूनि व्ययं संबलेन व्रजन्ति ॥ १ ॥

जिस मनुष्य के लग्न में बृहस्पति हो वह मनुष्य सुन्दर वस्त्र-आभूषणों से भूषित तथा सुखी, दिव्य (सुंदर) शरीर और अल्प वीर्य वाला, गुणों के कारण जनों का मान्य तथा परलोक में शुभगति पाने वाला और राह-खर्च में द्रव्य व्यय करने वाला होता है ॥ १ ॥

कवित्वे मतिर्दंडनेतृत्वशक्ति-
र्मुखे दोषधृक् शीघ्रभोगार्त एव ।
कुटुम्बे गुरौ कष्टतो द्रव्यलब्धिः
सदा नो धनं विश्रमेद्यत्नतोऽपि ॥ २ ॥

यदि द्वितीय स्थान में गुरु हो तो वह मनुष्य काव्य रचना करने की शक्ति और राज्य प्रबन्ध करने की सामर्थ्य रखता है और उसका मुख रोगग्रस्त होता है । वह अल्प वीर्यवाला,कष्ट से द्रव्य लाभ करनेवाला, यत्न करने पर भी द्रव्यरहित होता है ॥ २ ॥

भवेद्यस्य दुश्चिक्यगो देवमंत्री
लघूनां लघीयान् सुखं सोदराणाम् ।
कृतघ्नो भवेन्मित्रसार्थे न मैत्री
ललाटोदयेऽप्यर्थलाभो न तद्वत् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्य के तृतीय स्थान में गुरु हो वह मनुष्य तुच्छों के मध्य में अति तुच्छ हो, सहोदर भ्राताओं के सुख से सम्पन्न हो, कृतघ्न हो, मित्रों से मित्रता न हो, भाग्य का उदय और राज्यमान होने पर भी द्रव्य लाभ न हो ॥ ३ ॥

गृहद्वारतः श्रूयते वाजिह्रेषा
द्विजोच्चारितो वेदघोषोऽपि तद्वत् ।
प्रतिस्पर्द्धिनः कुर्वते पारिचर्य्यं
चतुर्थे गुरौ तप्तमन्तर्गतं च ॥ ४ ॥

जिसके चतुर्थ स्थान में गुरु हो उसके द्वार से घोड़ों का शब्द और वेदघोष सुनाई पड़ता है, शत्रु उसकी शुश्रूषा में रहते हैं, परन्तु असंतोष के कारण उसका मन तप्त रहता है ॥ ४ ॥

विलासे मतिर्बुद्धिगे देवपूज्ये
भवेज्जल्पकः कल्पको लेखको वा ।

निदाने सुते विद्यमानेऽतिभूतिः
फलोपद्रवः पक्ककाले फलस्य ॥ ५ ॥

जिसके पंचम स्थान में गुरु हो उस मनुष्य की रुचि भोगों में अधिक होती है तथा वह वक्ता, तार्किक (बहस करनेवाला) अथवा लेखक होता है। कार्य का फल मिलने के काल में विघ्न हो जाता है, परन्तु पुत्र विद्यमान होने पर धन की समृद्धि होती है ॥ ५ ॥

रुजार्तो जनन्या रुजः संभवेयू
रिपौ वाक्पतौ शत्रुहन्तृत्वमेति।
बलादुद्धतः को रणे तस्य जेता
महिष्यादिशर्मा न तन्मातुलानाम् ॥ ६ ॥

यदि षष्ठ स्थान में बृहस्पति हो तो वह पुरुष स्वयं रोग से पीड़ित हो और उसकी माता भी रोग से पीड़ित हो। वह शत्रुओं का नाश करे तथा रण में किसी से जीता न जावे। उसको महिषी (भैंस) आदि से पूर्ण सुख प्राप्त हो परन्तु मामा का सुख न मिले। ॥ ६ ॥

मतिस्तस्य बह्वी विभूतिश्च बह्वी
रतिर्वै भवेद्भामिनीनामबह्वी।

गुरुर्गर्वकृद्यस्य जामित्रभावे
सपिण्डाधिकोऽखंडकंदर्प एव ॥ ७ ॥

यदि सप्तम स्थान में गुरु हो तो वह मनुष्य तीक्ष्ण बुद्धिवाला, बहुत धनवान, स्त्रियों से स्वल्प प्रीति करनेवाला, अभिमान करनेवाला, अपनी जाति में श्रेष्ठ तथा कामदेव के तुल्य रूपवाला होता है ॥ ७ ॥

चिरं नो वसेत्पैतृके चैव गेहे
चिरस्थायि नो तद्गृहं तस्य देहम् ।
चिरं नो भवेत्तस्य नीरोगमङ्गं
गुरुर्मृत्युगो यस्य वैकुण्ठगन्ता ॥ ८ ॥

यदि अष्टम स्थान में बृहस्पति हो तो वह मनुष्य बहुत काल तक पिता के घर में न बसे । उसका अंग रोगरहित न हो तथा यह बहुत काल तक न जीवे । अंत समय में वैकुंठ को प्राप्त होवे ॥ ८ ॥

चतुर्भूमिकं तद्गृहं तस्य भूमी-
पतेर्वल्लभो वल्लभा भूमिदेवाः ।
गुरौ धर्मगे बान्धवाः स्युर्विनीताः
सदाऽऽलस्यता धर्मवैगुण्यकारी ॥ ९ ॥

जिस मनुष्य के लग्न से नवम स्थान में बृहस्पति हो तो वह मनुष्य राजा का प्रिय तथा चार मंजिल के गृह वाला हो, ब्राह्मण उसको प्रिय हों, उसके भाई विनम्र हों, परन्तु वह सदा आलस्य के कारण सन्ध्यावंदन आदि नित्यकर्मों को त्याग दे ॥ ९ ॥

ध्वजा मण्डपे मन्दिरं चित्रशालं
पितुः पूर्वजेभ्योऽपि तेजोधिकत्वम् ।
न तुष्टो भवेच्छर्मणा पुत्रकाणां
पचेत्प्रत्यहं प्रस्थमासुद्रमन्नम् ॥ १० ॥

यदि दशम स्थान में गुरु हो तो यह मनुष्य ध्वजा से युक्त मंदिर एवं चित्रकारी से युक्त गृहवाला हो। वह पुत्र के सुख से प्रसन्न न हो अर्थात् पुत्र के साथ वैर रखनेवाला हो और उसके भोजन में सेर भर साँभर नमक खर्च हो अर्थात् यह मनुष्य बहुतों को भोजन करानेवाला हो ॥ १० ॥

अकुप्यं च लाभे गुरौ किन्न लभ्यं
वदन्तीष्टधीमन्तमन्ये मुनीन्द्राः ।
पितुर्भारभृत्स्वांगजास्तस्य पञ्च
परार्थस्तदर्थो न चेद्वैभवाय ॥ ११ ॥

यदि लाभ के स्थान में बृहस्पति हो तो उस मनुष्य को

सुवर्ण, चाँदी आदि की वस्तुएं अवश्य प्राप्त हों। प्रसिद्ध जातककर्ता श्रेष्ठ मुनि कहते हैं कि वह बुद्धिमान् भी हो और हर तरह पिता का पोषक हो, उसके पाँच पुत्र हों परंतु इसका द्रव्य दान-धर्म में खर्च हो, धनाढ्यता के लिए न हो ॥ ११ ॥

यशः कीदृशं सद्व्यये साभिमाने
मतिः कीदृशी वञ्चना चेत्परेषाम् ।
विधिः कीदृशोऽर्थस्य नाशो हि येन
त्रयस्ते भवेयुर्व्यये यस्य जीवः ॥ १२ ॥

जिसके द्वादश स्थान में बृहस्पति हो उसका अभिमान सहित अच्छा खर्च होने के कारण यश न हो, उसकी बुद्धि दूसरों के ठगने में ही रहे और चाहे उसके पास कुबेर के समान भी द्रव्य हो तो भी वह नाश हो जावे ॥ १२ ॥

शुक्रभावफल

समीचीनमङ्गं समीचीनसङ्गः
समीचीनबह्वङ्गनाभोगयुक्तः ।
समीचीनकर्मा समीचीनशर्मा
समीचीनशुक्रो यदा लग्नवर्ती ॥ १ ॥

स्थान आदि छः प्रकार के बल से युक्त शुक्र जिस मनुष्य के लग्न में हो वह मनुष्य सुंदर अंग और सुंदर संगवाला, अच्छी अंगनाओं का भोग करनेवाला, अच्छे कर्म करने वाला और अच्छे सुख पानेवाला होता है ॥ १ ॥

मुखं चारुभाषं मनीषाऽपि चार्वी
मुखं चारु चारूणि वासांसि तस्य ।
कुटुम्बे स्थितः पूर्वदेवस्य पूज्यः
कुटुम्बेन किं चारु चार्वंगिकामः ॥ २ ॥

जिस मनुष्य के धन स्थान में शुक्र हो वह मनुष्य सुन्दर वाणीवाला, तीव्र बुद्धिवाला, सुंदर मुखवाला, सुंदर वस्त्र धारण करनेवाला, कुटुम्ब में शोभावाला और सुंदर अंगनाओं की अभिलाषा वाला होता है ॥ २ ॥

रतिः स्त्रीजने तस्य नो बंधुनाशो
भृगुर्यस्य दुश्चिक्यगो दानवानाम् ।
न पूर्णो भवेत्पुत्रसौख्योऽपि सेना-
पतिः कातरो दानसंग्रामकाले ॥ ३ ॥

जिसके तृतीय स्थान में शुक्र हो उस मनुष्य की स्त्रियों से प्रीति न हो, बन्धुनाश हो तथा पुत्रसौख्य भी पूर्ण रूप से

न हो, सेनापति होकर भी वह संग्रामकाल में कायर हो जावे ।। ३ ।।

महित्वेऽधिको यस्य तुर्येऽसुरेज्यो
जनैः किं जनैश्चापरै रुष्टतुष्टैः ।
कियत्पोषयेज्जन्मतः संजनन्या
अधीनार्पितोपायनैरेव पूर्णः ॥ ४ ॥

जिसके चतुर्थ स्थान में शुक्र हो वह मनुष्य अत्यन्त महान होता है, अन्य लोगों के क्रुद्ध या संतुष्ट होने से उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह जन्म से ही माता का कितना पोषण करे, उसका घर तो अधीन लोगों के द्वारा दी गयी भेंट से ही भरा रहता है ।। ४ ।।

सपुत्रेऽपि किं यस्य शुक्रो न पुत्रे
प्रयासेन किं यत्नसंपादितार्थः ।
व्युदर्कं विना मंत्रमिष्टासनाभ्या-
मधीतेन किं चेत्कवित्वे न शक्तिः ॥ ५ ॥

यदि पंचम स्थान में शुक्र हो तो उसको पुत्र का सुख मिले और जिस प्रयास से द्रव्य संचित किया है उस प्रयास की सफलता हो, ऐश्वर्यवान् हो, मंत्र जप करनेवाला, उत्तम भोजनवाला, काव्य करने की शक्तिवाला तथा वेद आदि का पढ़नेवाला हो ।। ५ ।।

सदा दानवेज्ये सुधासिक्तशत्रु-
र्व्ययः शत्रुगे चोत्तमौ तौ भवेताम् ।
विपद्येत संपादितं चापि कृत्यं
तपेन्मन्त्रतः पूज्यसौख्यं न धत्ते ॥ ६ ॥

जिसके षष्ठ स्थान में शुक्र हो उस मनुष्य का उसके शत्रु भी सत्कार करें और उसका द्रव्य सत्कर्म में खर्च हो, उसके द्वारा संपादित किये कार्य नष्ट हो जावें, कुमंत्र से संताप मिले, गुरु आदि पूज्यजनों से सुख प्राप्त न हो इत्यादि फल होते हैं ॥ ६ ॥

कलत्रे कलत्रात्सुखं नो कलत्रात्
कलत्रं तु शुक्रे भवेद्रत्नगर्भम् ।
विलासाधिको गण्यते च प्रवासी
प्रयासाल्पकः के न मुह्यन्ति तस्मात् ॥ ७ ॥

यदि सप्तम स्थान में शुक्र हो तो उस मनुष्य की कटि में व्यथा (पीड़ा) रहे और उसकी स्त्री से रत्नरूप पुत्र उत्पन्न हो। वह विलास करनेवाला, विदेश में रहनेवाला तथा स्वल्प प्रयास करने वाला हो। उसकी चतुराई से कौन पुरुष मोहित न हो जावे अर्थात् सभी मोहित हो जावें ॥ ७ ॥

जनः क्षुद्रवादी चिरं चारु जीवे-
चतुष्पात्सुखं दैत्यपूज्यो ददाति ।
जनुष्यष्टमे कष्टसाध्यो जयार्थः
पुनर्वर्द्धते दीयमानं धनर्णम् ॥ ८ ॥

यदि अष्टम स्थान में जन्मकाल में शुक्र हो तो उस मनुष्य को गौ अश्वादिकों का सुख देता है । वह मनुष्य दुष्ट वचनों का बोलनेवाला तथा बड़ी आयुवाला हो । जय तथा अर्थ (द्रव्य) बड़े यत्न से सिद्ध हों और ब्याज से उसके द्रव्य की वृद्धि हो ॥ ८ ॥

भृगौ त्रित्रिकोणे पुरे के न पौराः
कुसीदेन ये वृद्धिमस्मै ददीरन् ।
गृहं ज्ञायते तस्य धर्मध्वजादेः
सहोत्थादिसौख्यं शरीरे सुखं च ॥ ९ ॥

यदि नवम स्थान में शुक्र हो तो उस नगर में कौन पुरुष उसको ब्याज न देवे अर्थात् सभी उसके कर्जी रहकर उसको ब्याज देवें, उसका घर पवित्रता के कारण विख्यात हो और उसको भाइयों तथा भृत्य आदि से शरीर का पूर्ण सुख प्राप्त हो ॥ ९ ॥

भृगुः कर्मगो गोत्रवीर्यं रुणद्धि
क्षयार्थं भ्रमः किन्न आत्मीय एव ।
तुलामानतो हाटकं विप्रवृत्या
जनाडम्बरैः प्रत्यहं वा विवादात् ॥ १० ॥

यदि जन्मसमय में लग्न से दशम स्थान में शुक्र हो तो उस मनुष्य के संतान का अवरोध, चित्त में भ्रम, शरीर का क्षय, ब्राह्मणवृत्ति से और आडंबर एवं वाद से द्रव्यप्राप्ति इन फलों को करता है ॥ १० ॥

भृगुर्लाभगो लाभदो यस्य लग्ना-
त्सुरूपं महीपं च कुर्याच्च सम्यक् ।
लसत्कीर्तिसत्यानुरक्तं गुणाढ्यं
महाभोगमैश्वर्ययुक्तं सुशीलम् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्य के लग्न से एकादश स्थान में शुक्र हो तो उस मनुष्य को द्रव्यलाभ, सुशीलता, श्रेष्ठ कीर्ति तथा सुंदर रूप, प्रदान करता है। उसे सच्चा अनुरागी, गुणी, बड़ा भोगी, ऐश्वर्यवान तथा पूर्ण राजा ही बना देता है। ॥ ११ ॥

कदाप्येति वित्तं विलीयेत वित्तं
सितो द्वादशे केलिसत्कर्मशर्मा ।

गुणानां च कीर्तेः क्षयं मित्रवैरं
जनानां विरोधः सदाऽसौ करोति ॥ १२ ॥

यदि लग्न से बारहवें स्थान में शुक्र हो तो उस मनुष्य को द्रव्य प्राप्त हो फिर नष्ट हो जाय ,फिर मिले और फिर नष्ट हो जाय ऐसे ही होता रहे । क्रीड़ा एवं सत्कर्मों से उसको सुख मिले, गुणों और कीर्ति का क्षय हो, मित्रों से वैर तथा स्वजनों से विरोध हो इत्यादि फल करता है ॥ १२ ॥

शनिभावफल

धनेनातिपूर्णोऽतितृष्णो विषादी
तनुस्थेऽर्कजे स्थूलदृष्टिर्नरः स्यात् ।
विषं दृष्टिजं त्वाधिकृद्व्याधिबाधं
स्वयं पीडितो मत्सरावेश एव ॥ १ ॥

जिस मनुष्य के जन्मकाल में लग्न में शनि होवे वह मनुष्य धन से अतिपूर्ण, अति तृष्णावान् (संतोषहीन), शोक करने वाला, सूक्ष्मविचाररहित, दृष्टि से ही शत्रु को दमन करनेवाला, आधि तथा व्याधि से व्यथित तथा दूसरे की डाह में स्वयं पीड़ित होता है ॥ १ ॥

सुखापेक्षया वर्जितोऽसौ कुटुम्बात्
कुटुम्बे शनौ वस्तु किं किं न भुङ्क्ते ।

समं वक्ति मित्रेण तिक्तं वचोऽपि
प्रसक्तिं विना लोहकं को लभेत ॥ २ ॥

यदि द्वितीय स्थान में शनि हो तो वह पुरुष सुख के लिए कुटुंब से वियोगी रहे अर्थात् अन्य देश में रहे और विषयों का भोगनेवाला, मित्र के साथ कटुवचन बोलनेवाला, आभूषण शस्त्र आदि को प्राप्त करने वाला होता है ॥ २ ॥

तृतीये शनौ शीतलं नैव चित्तं
जनाद्दुद्यमाज्जायते युक्तभाषी ।
अविघ्नं भवेत् कर्हिचिन्नैव भाग्यं
दृढाशः सुखी दुर्मुखः सत्कृतोऽपि ॥ ३ ॥

यदि तृतीय स्थान में शनि हो तो उस मनुष्य का चित्त भ्राता आदि के पराक्रम से और उद्यम से शीतल न हो तथा उसका भाग्य किसी काल में विघ्नरहित न हो। वह मनुष्य थोड़ा बोलनेवाला, दृढ़ आशावाला, अचल तृष्णावाला, तथा सुखी हो तथा सत्कार किये जाने पर भी मुँह फुलाये रहे ॥ ३

चतुर्थे शनौ पैतृकं याति दूरं
धनं मन्दिरं बन्धुवर्गापवादः ।
पितुश्चापि मातुश्च सन्तापकारी
गृहे वाहने हानयो वातरोगी ॥ ४ ॥

यदि चतुर्थ स्थान में शनि हो तो पिता का धन व मंदिर (घर) प्राप्त न हों और बन्धुवर्गों के साथ विरोध हो। वह माता पिता को संताप देनेवाला, घर तथा वाहनादिकों में हानि पाने वाला, और वातरोगी होता है ॥ ४ ॥

शनौ पञ्चमे च प्रजाहेतुदुःखी
विभूतिश्चला तस्य बुद्धिर्न शुद्धा ।
रतिर्दैवते शब्दशास्त्रे न तद्वत्
कलिर्मित्रतो मन्त्रतः क्रोडपीडा ॥ ५ ॥

यदि पंचम स्थान में शनि हो तो संतान के कारण क्लेश हो, धनसमृद्धि तथा बुद्धि स्थिर न हो, देवता तथा शब्दशास्त्र में विश्वास न हो, मित्रों के साथ कलह हो, और बात न पचाने के कारण जलंधर रोग से पीड़ित हो ॥ ५ ॥

अरेर्भूपतेश्चोरतो भीतयः किं
यदीनस्य पुत्रो भवेद्यस्य शत्रौ ।
न युद्धे भवेत्सम्मुखे तस्य योद्धा
महिष्यादिकं मातुलानां विनाशः ॥ ६ ॥

जिसके षष्ठ स्थान में शनि हो उस मनुष्य को शत्रु, राजा और चोर इनसे क्या भय होता है ? अर्थात् नहीं होता। बल-बुद्धि से उसको रण में कोई जीत नहीं सकता। उसे गौ

आदि पशुओं से लाभ होता है परन्तु उसके मातुलों का विनाश होता है ॥ ६ ॥

सुदारा न मित्रं चिरं चारु वित्तं
शनौ द्यूनगे दम्पती रोगयुक्तौ।
अनुत्साहसन्तप्तकुद्धीनचेताः
कुतो वीर्यवान्विह्वलो लोलुपः स्यात् ॥७॥

यदि सप्तम स्थान में शनि हो तो सुन्दर स्त्री, श्रेष्ठ मित्र, श्रेष्ठ द्रव्य, इनका बहुत काल तक ह्रास हो अर्थात् सप्तम भवन में शनि होने से इनका सुख नहीं होता है और स्त्री-पुरुष रोगयुक्त रहते हैं। वह उत्साहरहित और हीनचित्त होता है और वीर्यरहित, विह्वल, एवं लोलुप (अतिलोभी) होता है ॥ ७ ॥

वियोगो जनानां त्वनौपाधिकानां
विनाशो धनानां स को यस्य न स्यात्।
शनौ रन्ध्रगे व्याधितः क्षुद्रदर्शी
तदग्रे जनः कैतवं किं करोतु ॥ ८ ॥

यदि अष्टम स्थान में शनि हो तो ऐसा कौन मनुष्य है जिसे बिना कारण के मित्र और भाई आदि का वियोग नहीं होता, जिसके धन का नाश नहीं होता और जो व्याधि से पीड़ित नहीं होता, अर्थात् कोई नहीं। उसके सम्मुख क्षुद्र मनुष्य क्या धूर्तता करे अर्थात् यह स्वयं धूर्तशिरोमणि होता है ॥ ८ ॥

मतिस्तस्य तिक्ता न तिक्तं तु शीलं
रतिर्योगशास्त्रे गुणो राजसः स्यात् ।
सुहृद्वर्गतो दुःखितो दीनबुद्धया
शनिर्धर्मगः कर्मकृत् संन्यसेद्वा ॥ ९ ॥

यदि नवम स्थान में शनि हो तो उस मनुष्य की बुद्धि तो तीखी होती है परन्तु स्वभाव अच्छा होता है। वह योग-शास्त्र में प्रीति रखनेवाला तथा रजोगुणी होता है, दीन बुद्धि के कारण सुहृद्वर्ग से दुःखी रहता है और या तो कार्य करता है अथवा संन्यासी हो जाता है ॥ ९ ॥

अजा तस्य माता पिता बाहुरेव
वृथा सर्वतो दुष्टकर्माधिपत्यात् ।
शनैरेधते कर्मगः शर्म मन्दो
जयो विग्रहे जीविकानां तु यस्य ॥ १० ॥

यदि दशम स्थान में शनि हो तो वह बालक माता की मृत्यु होने के कारण बकरी का दुग्धपान करे और बाल्य अवस्था में पिता की मृत्यु होने के कारण अपनी भुजाओं से द्रव्य संचित करे। कोई अधिकार मिलने पर बिना प्रयोजन जीवों को मारने आदि का दुष्ट कर्म करे, सुख

धीरे धीरे बढ़ें, युद्ध में विजय प्राप्त हो, और आजीविका उत्तम हो ॥ १० ॥

शनौ व्योमगे विन्दते किं च माता
सुखं शैशवं दृश्यते किं तु पित्रा ।
निधिः स्थापितो वापितो वा कृषिश्च
प्रणश्येद्ध्रुवं दृश्यतो दैवतो वा ॥ ११ ॥

अब अन्य मत से शनि का फल कहते हैं कि यदि दशम स्थान में शनि हो तो क्या उस बालक की माता सुख पाती है अर्थात् नहीं पाती, और उसका पिता क्या उसकी बालक्रीड़ा देखता है अर्थात् नहीं देखता, और पिता का संचित किया खजाना तथा अपनी बोई कृषि नष्ट हो जाने के कारण वह नहीं भोग पाता है ॥ ११ ॥

स्थिरं वित्तमायुः स्थिरं मानसं च
स्थिरा नैव रोगादयो न स्थिराणि ।
अपत्यानि शूरः शतादेक एव
प्रपञ्चाधिको लाभगे भानुपुत्रे ॥ १२ ॥

यदि लाभ स्थान में शनि हो तो वह मनुष्य स्थिर आयुवाला और स्थिर द्रव्यवाला होता है। उसे संतान का शोक होता है, रोग आदि नहीं होते हैं, और प्रपञ्च में वह सौ मनुष्यों से अधिक शूर होता है ॥ १२ ॥

व्ययस्थे यदा सूर्यसूनौ नरः स्या-
दशूरोऽथवा निस्त्रपो मन्दनेत्रः।
प्रसन्नो बहिर्नो गृहे लग्नपश्च
व्ययस्थो रिपुध्वंसकृद्यज्ञभोक्ता॥ १२॥

यदि बारहवें स्थान में शनि हो तो वह मनुष्य कायर, निर्लज्ज, मंदनेत्र तथा विदेश में प्रसन्न रहनेवाला, और घर में अप्रसन्न रहनेवाला होता है। यदि लग्न का स्वामी द्वादश स्थान में हो तो वह मनुष्य शत्रुओं का नाश करने-वाला और यज्ञ द्रव्य से विभव समृद्धिवाला होता है॥१२॥

राहुभावफल

स्ववाक्येऽसमर्थः परेषां प्रतापात्
प्रभावात्समाच्छादयेत्स्वान्पराथान्।
तमो यस्य लग्ने स भग्नारिवीर्यः
कलत्रेऽधृतिं भूरिदारोऽपि यायात्॥ १॥

जिस मनुष्य के लग्न में राहु होता है वह मनुष्य दूसरों के प्रताप से अपने कहे हुए वाक्य को पालन करने में असमर्थ होता है। वह शत्रुओं को जीतनेवाला और दूसरों के प्रभाव से अपनी जाति का तथा परजातियों के कार्यों का साधन करता

है और बहुत स्त्रियोंवाला होने पर भी यह मनुष्य संताप को प्राप्त नहीं होता है अर्थात् यह अति कामी होता है।। १ ।।

कुटुम्बे तमो नष्टभूतं कुटुम्बं
मृषाभाषिता निर्भयो वित्तपालः।
स्ववर्गप्रणाशो भयं शस्त्रतश्चे-
दवश्यं खलेभ्यो लभेत्पारवश्यम् ॥ २ ॥

यदि लग्न से द्वितीय स्थान में राहु हो तो उस मनुष्य का कुटुम्ब नष्ट हुआ समझना। वह मनुष्य झूठ बोलनेवाला, निर्भय, और कृपण होता है। उसे खल पुरुषों से बंधन प्राप्त होता है, शस्त्रों से भय होता है और उसके बंधुओं का नाश होता है ।। २ ।।

न नागोऽथ सिंहो भुजो विक्रमेण
प्रयातीह सिंहीसुते तत्समत्वम्।
तृतीये जगत्सोदरत्वं समेति
प्रयातोऽपि भाग्यं कुतो यत्नहेतुः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्य के तृतीय स्थान में राहु हो वह मनुष्य सिंह और हाथी से भी अधिक पराक्रमवाला, संपूर्ण जगत् का मित्र और उद्यम से द्रव्य प्राप्त करनेवाला तथा प्रतापी होता है ।। ३ ।।

चतुर्थे कथं मातृनैरुज्यदेहो
हृदि ज्वालया शीतलं किं बहिः स्यात् ।
स चेदन्यथा मेषगो कर्कगो वा
बुधर्क्षेऽसुरो भूपतेर्बन्धुरेव ॥ ४ ॥

यदि चतुर्थ स्थान में राहु हो तो उस मनुष्य की माता रोग-ग्रस्त रहती है और आप भी व्याधियों से पीड़ित रहता है। यदि मेष, वृष, कर्क, कन्या, मिथुन इन राशियों पर राहु हो तो वह पुरुष राजा का बंधु अर्थात् अति प्रिय होता है ॥४॥

सुते तत्सुतोत्पत्तिकृत्सिंहिकायाः
सुतो भामिनीचिन्तया चित्ततापः ।
सति क्रोडरोगे किमाहारहेतुः
प्रपञ्चेन किं प्रापकं द्रष्टवर्ज्यम् ॥ ५ ॥

यदि पंचम स्थान में राहु हो तो उस मनुष्य के पुत्र की उत्पत्ति करता है, स्त्री क्रोधयुक्त होने के कारण चिन्ता से चित्त को तप्त करता है, उदर (पेट) में अग्निमांद्य आदि रोग करता है और बहुत प्रयास करने से स्वल्प द्रव्य की प्राप्ति कराता है ॥ ५ ॥

बलं बुद्धिवीर्ये धनं तद्यशेन
स्थितो वैरिभावेऽपि येषां जनानाम् ।

रिपूणामरण्यं दहेदेव राहुः
स्थिरं मानसं तत्तुला नो पृथिव्याम् ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकाल में षष्ठ स्थान में राहु होता है वह शत्रुओं के समूह को नष्ट कर देता है, बल, बुद्धि, और वीर्य, ये होने के कारण धन संचित करता है, स्थिरचित्त रहता है और पृथ्वी पर बड़ा प्रतापी होता है ॥ ६ ॥

विनाशं लभेयुर्घुने तद्युवत्यो
रुजो धातुपाकादिना चन्द्रमर्दी ।
कटाहे यथा लोडयेज्जातवेदा
वियोगापवादाः शमं न प्रयान्ति ॥ ७ ॥

जन्मकाल में यदि लग्न से सप्तम स्थान में राहु हो तो उस मनुष्य की स्त्रियाँ, कड़ाह में तेल की तरह धातुपाक आदि रोग से तपकर नाश को प्राप्त हो जाती हैं। वह बंधुवियोग के दुःख से तप्त रहता है और उसकी लोकनिंदा शांति को नहीं प्राप्त होती है ॥ ७ ॥

नृपैः पण्डितैर्वन्दितो निन्दितः स्वैः
सकृद्भाग्यलाभोऽसकृद्भ्रंश एव ।
धनं जातकं तं जनाश्च त्यजन्ति
श्रमग्रन्थिकृद्रन्ध्रगो ब्रध्नशत्रुः ॥ ८ ॥

यदि अष्टम स्थान में राहु हो तो उस मनुष्य को गठिया वातरोग करता है। उस मनुष्य को पुरुष त्याग कर देते हैं तथा पिता का धन भी उसका त्याग कर देता है अर्थात् नहीं मिलता है। वह पुरुष राजा और पंडितों से पूजित और स्वजनों से निंदित होता है। इसको लाभ तो एक बार ही होता है परन्तु कार्यहानि बारंबार होती है ॥ ८ ॥

मनीषी कृतं न त्यजेद्बन्धुवर्गः
पालयेत्पूजितः स्याद्गुणैः स्वैः ।
सभाद्योतको यस्य चेत्त्रित्रिकोणे
तमः कौतुकी देवतीर्थे दयालुः ॥ ९ ॥

जिसके नवमस्थान में राहु हो वह मनुष्य बुद्धिमान्, अपने गुणों से पूजित, दयावान्, तीर्थों में प्रसन्न रहनेवाला, सभा का प्रकाशक, किये उपकार को माननेवाला, संपूर्ण काल में बंधुवर्ग का पालनेवाला होता है ॥ ९ ॥

सदा म्लेच्छसंसर्गतोऽतीवगर्वं
लभेन्मानिनीकामिनीभोगमुच्चैः ।
जनैर्व्याकुलोऽसौ सुखं नाधिशेते
मदार्थव्ययी क्रूरकर्मा खगेऽगौ ॥ १० ॥

जिसके दशम स्थान में राहु हो वह मनुष्य म्लेच्छसंसर्ग

से गर्व प्राप्त करनेवाला, मानवती स्त्रियों को भोगने वाला, ऊँचे मनुष्यों से क्लेशित होने से रात्रि में निद्रारहित, मद से द्रव्य नष्ट करनेवाला और क्रूर कर्म करनेवाला होता है ॥१०॥

सदाम्लेच्छतोऽर्थं लभेत्साभिमान-
श्चरेत् किंकरेण व्रजेत् किं विदेशम् ।
परार्थाननर्थी हरेद् धूर्तबन्धुः
सुतोत्पत्तिसौख्यं तमो लाभगश्चेत् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्य के लाभ (ग्यारहवें) स्थान में राहु हो वह पुत्र की उत्पत्ति का सुख और म्लेच्छों से द्रव्य का लाभ करता है । वह मनुष्य नौकरों को साथ लेकर चलता है और वह विदेश को किसलिये जाय अर्थात् इसको घर में ही संपूर्ण संपत्ति प्राप्त होती है । धूर्तों के साथ उसकी मैत्री होती है और उसका भय मानकर सब उसे द्रव्य देते हैं ॥ ११ ॥

तमोद्वादशे दीनता पार्श्वशूलं
प्रयत्ने कृतेऽनर्थतामातनोति ।
खलैर्मित्रतां साधुलोके रिपुत्वं
विरामे मनो वाञ्छितार्थस्य सिद्धिम् ॥१२॥

यदि बारहवें स्थान में राहु हो तो उस मनुष्य के दीनता, पार्श्वशूल, छाती में वातपीड़ा, खलों के संग मैत्री, सज्जनों के

संग शत्रुता, चित्त में शान्ति, प्रयत्न करने पर भी अनर्थ; पश्चात् वांछित अर्थ की सिद्धि इत्यादि फल करता है ॥ १२ ॥

केतुभावफल

तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्ता
तथा दुर्जनेभ्यो भयो व्याकुलत्वम् ।
कलत्रादिचिन्ता सदोद्वेगता च
शरीरे व्यथा नैकधा मारुती स्यात् ॥ १ ॥

जिस मनुष्य के जन्मसमय में केतु लग्न में हो वह मनुष्य भ्राताओं के साथ कलह करनेवाला और दुर्जनों से भय पानेवाला होता है। उसका मन व्याकुलता को प्राप्त होता है और स्त्री आदि की चिंता से सदा उद्विग्न रहता है और शरीर में वातरोग से होनेवाली अनेक प्रकार की पीड़ा रहती है ॥१॥

धने केतुरव्यग्रता किं नरेशा-
द्धने धान्यनाशो मुखे रोगकृच्च ।
कुटुम्बाद्विरोधो वचः सत्कृतं वा
भवेत्स्वे गृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम् ॥ २ ॥

यदि द्वितीय भवन में केतु हो तो धन के कारण राजा से अव्यग्रता, धान्य का और आश्रित स्थान का नाश, मुखरोग, कुटुम्ब और मित्र आदिकों के साथ विरोध यह फल करता है;

तथा मधुर वचन और सत्कार का अभाव करता है। यदि यही केतु सौम्य ग्रह के भवन में तथा अपने घर में हो तो अत्यन्त सुखकारक होता है ॥ २ ॥

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं
धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च।
सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडां
भयोद्वेगचिन्ताकुलत्वं विधत्ते ॥ ३ ॥

यदि तृतीय स्थान में केतु हो तो शत्रुनाश, विवाद, धन, भोग, ऐश्वर्य, विषय सुख, तेज ये फल करता है और सुहृद्वर्ग का नाश, बाहुपीड़ा, भय, उद्वेग, चिन्ता से व्याकुलता इन फलों को भी करता है ॥ ३ ॥

चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचि-
त्सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति।
शिखी बन्धुवर्गात्सुखं स्वोच्चगेहे
चिरं नो वसेत्स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ॥ ४ ॥

यदि चतुर्थ स्थान में केतु हो तो माता का सुख न हो, सुहृदद्वर्गों से भी सुख न हो और पिता का धन वस्तु आदि नाश को प्राप्त हो। उस मनुष्य को अपने घर में चिरकाल वास न मिले और यदि मिले भी तो चित्त को

व्यग्रता (व्याकुलता) रहे। यदि यही केतु उच्च का हो तथा अपने भवन में हो तो बंधुवर्ग से सुख करता है ॥ ४ ॥

यदा पञ्चमे राहुपुच्छं प्रयाति
तदा सोदरे घातवातादिकष्टम्।
स्वबुद्धिर्व्यथा सन्ततः स्वल्पपुत्रः
स दासो भवेद्वीर्ययुक्तो नरोऽपि ॥ ५ ॥

यदि मनुष्य के जन्मकाल में पंचम स्थान में केतु हो तो सहोदर भ्राता को घात, वात आदि कष्ट करता है और वह लाठी अथवा शस्त्रघात एवं वात आदि रोगों से क्लेशित होता है या अपनी बुद्धि के कारण दुःख को प्राप्त होता है। थोड़ी संतान होती है और वह पराक्रमवाला होने पर भी दास होता है ॥ ५ ॥

तमः षष्ठभागे गते षष्ठभावे
भवेन्मातुलान्मानभङ्गो रिपूणाम्।
विनाशश्चतुष्पात्सुखं तुच्छचित्तं
शरीरे सदाऽनामयं व्याधिनाशः ॥ ६ ॥

षष्ठ स्थान में केतु हो तो मामा से मानभंग हो और रिपुओं का नाश हो, चौपायों (पशुओं) का सुख हो, दीन चित्तवाला हो और नीरोग शरीर हो तथा रोग हो तो शीघ्र ही शांत हो जावे ॥ ६ ॥

शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिन्ता
निवृत्तः स्वनाशोऽथवा वारिभीतिः ।
भवेत्कीटगः सर्वदा लाभकारी
कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता चेत् ॥ ७ ॥

यदि सप्तम स्थान में केतु हो तो इस मनुष्य को बहुत मार्गचिंता हो, धन नाश हो तथा जल भय हो, स्त्री पुत्र आदि को पीड़ा हो; और द्रव्य के कारण मन व्यग्र रहे। यदि केतु वृश्चिक राशि में स्थित हो तो संपूर्णकाल में लाभकारी है ॥ ७ ॥

गुदं पीड्यतेऽर्शादिरोगैरवश्यं
भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः ।
भवेदष्टमे राहुपुच्छेऽर्थलाभः
सदा कीटकन्याजगो युग्मगे तु ॥ ८ ॥

यदि अष्टम स्थान में केतु हो तो वह मनुष्य बवासीर आदि गुदा रोगों से पीड़ित रहे, वाहन आदिक से भय हो और द्रव्य का अवरोध हो। यदि वृश्चिक, कन्या, मिथुन, मेष और वृष इन राशियों में केतु स्थित हो तो संपूर्ण काल में लाभकारी होता है ॥ ८ ॥

शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशः
सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः ।

सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते
तपो दानतो हास्यवृद्धिं तदानीम् ॥ ९ ॥

यदि नवम स्थान में केतु हो तो उस मनुष्य के क्लेश का नाश हो और वह पुत्र की इच्छावाला हो, म्लेच्छ जातियों से भाग्य की वृद्धि हो, भ्राताओं से पीड़ा तथा भुजा का रोग हो और तप, दान आदि से जगत् में उपहास हो ॥ ९ ॥

पितुर्नो सुखी कर्मगो यस्य केतु-
र्यदा दुर्भगं कष्टभाजं करोति।
तदा वाहने पीडितं जातु जन्म
वृषाजालिकन्यासु चेच्छत्रुनाशम् ॥ १० ॥

यदि मनुष्य के दशम स्थान में केतु हो तो वह मनुष्य भाग्यरहित, पिता के सुख से रहित, कष्ट भोगनेवाला होता है; उस मनुष्य को किसी काल में वाहन (घोड़ा आदि) की हानि से दुःख होता है और यदि जन्म मेष, वृष, वृश्चिक, कन्या इन राशियों पर हो तो शत्रुओं का नाश होता है ॥ १० ॥

सुभाग्यः सुविद्याधिको दर्शनीयः
सुगात्रः सुवस्त्रं सुतेजोऽपि तस्य।

दरे पीड्यते सन्ततिर्दुर्भगा च
शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति ॥ ११ ॥

यदि लाभ अर्थात् एकादश स्थान में केतु हो तो वह मनुष्य को संपूर्ण वस्तुओं का लाभ करता है। वह मनुष्य अच्छा विद्वान, दर्शनयोग्य, सुंदर अंगोंवाला, सुंदर वस्त्रोंवाला तथा तेजस्वी होता है और उसे संपूर्ण प्रकार का लाभ रहता है। उसकी सन्तान पेट की पीड़ा से पीड़ित और भाग्यहीन होती है ॥ ११ ॥

शिखी रिष्फगो वस्तिगुह्यांघ्रिनेत्रे
रुजा पीडनं मातुलान्नैव शर्म ।
सदा राजतुल्यं नरं सद्व्ययं त-
द्रिपूणां विनाशं रणेऽसौ करोति ॥ १२ ॥

यदि मनुष्य के जन्मसमय द्वादश स्थान में केतु हो तो उसको राजा के तुल्य सुख भोगनेवाला करता है। वह मनुष्य रण में शत्रुओं को जीतता है, धर्मादि में उसका द्रव्य खर्च होता है, वस्तिप्रदेश (अर्थात् नाभि से नीचे भाग में), लिंग, पाँव, नेत्र इन अंगों में पीड़ा पाता है और मामा से सुख नहीं प्राप्त करता ॥ १२ ॥

इति चमत्कारचिंतामणिः भाषाटीका समाप्ता ॥

चमत्कारचिन्तामणौ यत्खगानां
फलं कीर्तितं भट्टनारायणेन।
पठेद्यो द्विजस्तस्य राज्ञां समक्षे
प्रवक्तुं न चान्ये समर्था भवेयुः ॥

इस चमत्कारचिंतामणि नामक ग्रंथ को नारायणभट्ट ने लोकोपकारार्थ बनाया है। इसमें ग्रहों के जो भावफल हैं उन्हें जो द्विज (ब्राह्मणादि ३ वर्णों में से) पढ़े वह राजाओं की सभा में चमत्कारपूर्ण फल कहने में चतुर हो। अन्य सामर्थी उससे आगे कहने को समर्थ नहीं होते ॥

गिलामलस्य पौत्रेण मन्नीलालतनूभुवा।
रचितं बुधदासेन राजारामत्रिपाठिना ॥

इति श्रीमद्गणकचक्रचूडामणिभट्टनारायणकृतचमत्कारचिंतामणौ
भागीरथीयाम्यतटे फलकपुरनगरे वास्तव्येन पण्डित-
राजारामेण कृता भाषाटीका समाप्ता ॥

